मूल्य एवं शिक्षा

सरिता
(सहायक असिस्टेंट)
उ०प्रा०वि० सूभरी महराब
सहारनपुर (उ०प्र०) भारत

सारांशिका

गाँधी जी ने कहा है कि शिक्षा का अर्थ है बच्चे और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में संर्वागीण, सर्वश्रेष्ठ को बाहर निकालनाँ। शिक्षा नैतिक, मानसिक और भावनात्मक सभी आयामों में व्यक्तित्व विकास का आधार है। प्राचीन काल से ही कहा जाता है "सा विद्या या विमुक्तये", जिसका अर्थ है कि शिक्षा से हमें अंततः मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस छोटे से संस्कृत वाक्यांश में अनिवार्य रूप से मूल्य शिक्षा का विचार और सार शामिल है, जो सभी दृष्टिकोणों में प्रासंगिक है। सीखना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य अपने बालकपन से ही जो कुछ सीखता है, वो उसके अनुभव बनते हैं और इन्ही अनुभवों से मूल्यों का निर्माण होता है अर्थात् मनुष्य के जीवन में मूल्यों का आवागमन बाल्यावस्था से ही होता है। परिवार, बच्चे की प्रथम पाठशाला है, जहाँ से वह स्वच्छता, प्रेम, सत्य, सहयोग, समय पालन, सहनशीलता आदि जीवन मूल्यों के विषय में सीखता है। बच्चे के जीवन में शिक्षा का प्रवेश प्राथमिक स्तर से होता है। जब वह 4–5 वर्ष का होने पर विद्यालय में प्रवेश करता है, तब उसको घर से सीखी गयी औपचारिक शिक्षाओं का ज्ञान होता है, उसके जीवन में मूल्यों का सही प्रकार से आगमन शैक्षिक वातावरण में होता है। स्वच्छता, प्रेम, सत्य, सहयोग, समय पालन, अहिंसा, परमार्थ, कर्तव्यपालन, सहनशीलता, निष्काम कर्म, दया आदि अनेक जीवन मूल्य हैं, जो जीवन की कसौटी बन कर मानव को मूल्यवान बनाती है। आत्म संयम, त्याग, साहस जैसी शक्तियां इसमें समाहित होती हैं। ये जीवन मूल्य जीवन में केवल सीखने से नही वरन् अभ्यास से परिपूर्ण होते हैं। यह सर्वविदित है कि बाल्यावस्था में जो कुछ भी सीखा, समझा जाता है, वही सम्पूर्ण जीवन को जीने का आधार बनता है। इसलिए इस समय पर उसे जो कुछ सिखाया, समझाया जाता है, वही उसके जीवन के मूल्य बनते हैं, परन्तु केवल वही नही जो कुछ पुस्तकों से जुटाया जाता है बल्कि वह भी जो अपने आस–पास के वातावरण से सीखता है।

मूल्य मानवीय गुण, विचार है, जिस पर सम्पूर्ण जीवन आधारित होता है वो पथ प्रदर्शक होते हैं, जिसके पद चिन्हों पर समाज के लोगों के विचार, व्यवहार, रीति रिवाज चलते हैं एवं समाज का जिनके प्रति सम्मान का भाव होता है, मूल्यों के निर्माण में आध्यात्मिक सहभागिता को नकारा नही जा सकता है। बालक के मन में मूल्यों का निर्माण करना कोई आसान काम नही है। इसके लिए कोई जादुई फार्मूला या विधि नही है। मूल्यों के निर्माण में परिवार, विद्यालय एवं परिवेश सभी की साझेदारी होती है। मूल्य निर्माण में सीखने के सभी पहलुओं को शामिल करना होता है। यथा ज्ञानात्मक, बोधात्मक, संवेगात्मक, भावात्मक आदि सभी। वैश्वीकरण के इस युग में अर्थव्यवस्था में तेजी लाने के लिए तेजी से पश्चिमी रहन–सहन, रीति रिवाजों का अन्धानुकरण किया जा रहा है ताकि सभ्यता लाई जा सके परन्तु सभ्यता का अर्थ प्रत्येक देश, व्यक्ति के लिए एक समान नही है। तथाकथित सभ्यता को अपनाने के चक्कर में हमने अपने स्वयं के, समाज के, देश के मूल्यों का ह्रास कर दिया है। इस सबका असर हमारे नन्हे–मुन्ने बालको पर भी पडा है। हमे यह देखना आवश्यक है कि किसी बालक के जीवन में जीवन मूल्यों की स्थापना किस प्रकार की जा सकती है। इसकी शुरूआत परिवार से होती है। इसके बाद समाज एवं इन जीवन मूल्यों को सही आकार विद्यालयी परिवेश में मिलता है। यही वह स्थान है जहाँ बालक विभिन्न सामाजिक नियमों, विचारों, परिवेशों आदि से परिचित होता है। विभिन्न सांस्कृतिक विरासतों से उसका परिचय होता है। वह उन्हें अपने जीवन में आत्मसात् करके एक पीढी से दूसरी पीढी में उसका हस्तान्तरण करता है।

मुख्य शब्द : जीवन मूल्य, विचार, शिक्षा, दृष्टिकोण, दर्शन।

प्रस्तावना : शिक्षा ना केवल मनुष्य को आनंदित करती है, वरन् उसका सभी प्रकार से विकास भी करती है। शिक्षा का अर्थ केवल पुस्तकों के अध्ययन से नही है या फिर केवल बुद्धि के मापांको में वृद्धि करना और ना ही ये शिक्षा के लक्ष्य है। शिक्षा ग्रहण करने से तात्पर्य है कि मनुष्य अथवा बालक दूसरों के विचारों, भावों को समझ सके। उनकी संस्कृति, परिवेश को समझ सके। उसका अपने परिवेश के साथ सामंजस्य बैठा सके। साथ ही अपने भावों, विचारों को भी समझा कसे। तकनीकी रूप से शिक्षा वह प्रक्रिया है, जिसमें समाज, विद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं अन्य शैक्षिक माध्यमों से अपनी सांस्कृतिक विरासत, मूल्य एवं कौशलों का एक पीढी से दूसरी पीढी में स्थानान्तरण करता है। शिक्षा एवं संस्कृति एक दूसरे को प्रभावित करते है।

जीवन मूल्य पर विभिन्न दार्शनिकों के विचार :

नैतिक मूल्य जीवन को मजबूत एवं स्थायी बनाते हैं, जीवन में मूल्यों का विकास करने हेतु आन्तरिक गुणों का होना अति आवश्यक है। मूल्य मनुष्यता का आवश्यक अंग है। ये वो खुशबु है, जो सम्पूर्ण मानव जीवन को सुगंधमय बनाती है। विभिन्न भारतीय दार्शनिकों ने जीवन मूल्यों के महत्व को स्वीकार किया है, जिसमें से कुछ इस प्रकार से है।

'1' चार्वाक दर्शन–जीवन के मूल्य प्रसन्नता है, प्रसन्नता ही जीवन मूल्य।

'2' जैन दर्शन–मूल्य का अर्थ ब्रहमचर्य, वैराग्य एवं इन्द्रियों को वश में करना है।

'3' बौद्ध दर्शन–मूल्य व्यक्ति को स्वतंत्रता प्रदान करते हैं, मूल्यों का विकास करके विश्व के संवेदनशील प्राणियों की सेवा की जा सकती है।

'4' सांख्य दर्शन–विवेक, ज्ञान एवं जीवन मुक्ति ही आदर्श मूल्य है।

'5' वैशेषिक दर्शन–ब्रहमाण्ड में निहित समस्त प्रकाश को स्वयं

में समाहित करना ही मूल्य है।

'6' योग दर्शन–योग दर्शन में आठ प्रकार के मूल्यों के विषय में बताया गया है। इन्हें पंतजलि के अष्टमार्ग की संज्ञा दी जाती है।

मूल्य वे सिद्वान्त एवं नियम होते हैं जो जीवन को गुणवत्ता पूर्ण बनाते हैं, हमे अपने जीवन में क्या करना चाहिए अथवा क्या नही करना चाहिए। इसका ज्ञान हमें हमारे मानवीय मूल्य कराते है। मूल्य हमारे चरित्र एवं व्यक्तित्व का आधार होते है। मूल्यों का विकास ह्रदय की गहराईयों से होता है। प्रेम, दया, सदभाव, करूणा, सहनशीलता जैसे मानवीय गुण जीवन का आधार होते हैं, जोकि ईमानदारी, अनुशासन, समयबद्धता का विकास करने के लिए अति आवश्यक होते हैं।

जीवन मूल्यों का ह्रास एवं मूल्य आधारित शिक्षा :

वर्तमान समय में मनुष्यों के जीवन के मूल्यों में गिरावट आयी है। यद्यपि हमारा समाज विकास के विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ रहा है, जैसे तकनीकी, प्रौद्योगिकी, अवसंरचना आदि। परन्तु इनके नैतिक पक्ष में निरन्तर गिरावट हो रही है। वैश्वीकरण के इस युग में प्रत्येक राष्ट! अपनी जी.डी.पी. बढाने में लगा है। इस हेतु ना केवल पश्चिमी तकनीको वरन् वहां के रहन–सहन, सभ्यता का भी अन्धानुकरण किया जा रहा है। परिणाम स्वरूप भौतिक सुख सुविधाओं की तेजी से मांग बढ रही है। इन भौतिक सुविधाओं को पाने की लालसा ने मनुष्य के चरित्र को पतन की ओर अग्रसर किया है, जिससे समाज व देश का पतन भी निश्चित है। आज हम विभिन्न समस्याओं जैसे आतंकवाद, गरीबी, जनसंख्या वृद्धि जैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इस समय मानव विकास एवं सभ्यता की नींव को मजबूत करने हेतु नैतिक मूल्यों की समाज में पुर्नस्थापना करनी होगी और यह केवल मूल्य आधारित शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। समाज की विभिन्न समस्याओं का समाधान करने हेतु समस्या की जड़ तक पहुँचना अति आवश्यक है। राष्ट! को नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण नागरिकों की आवश्यकता है किसी भी समाज का आधार वहां रहने वाले नागरिकों के जीवन चरित्र होता है। किसी भी समाज की प्रगति का माप वहां के रहने वाले नागरिकों से होता है। मूल्य ना तो खरीदे जा सकते हैं और ना ही उधार लिए जा सकते है। मूल्यों का विकास अंतरिक रूप से होता है, ये आंतरिक गुण प्रेम, सौहार्द, प्रसन्नता के साथ–साथ अन्य सामाजिक आदर्श जैसे मानवता, सहनशीलता, जिम्मेदारी की भावना एवं ईमानदारी के चारित्रिक गुणों के रूप में प्रदर्शित होते है। चारित्रिक विशेषताओं पर आन्तरिक विशेषताओं के साथ–साथ बाह्य कारक जैसे जन्म स्थान, आस–पास का वातावरण का भी प्रभाव पडता है। बालक को दी जाने वाली शिक्षा व्यवसायिक तकनीकी होने के साथ–साथ मूल्य परक भी होनी चाहिए ताकि वह एक उत्तम बालक, एक उत्तम समाज एवं एक उत्तम राष्ट! का निर्माण कर सके।

अगर हम आज की पीढी को मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करते हैं तो आने वाली पीढ़ी निश्चय ही बेहतर होगी इसलिए वर्तमान समय में शिक्षा के माध्यम से बालकों में जीवन के मूल्यों का विकास करना नितान्त आवश्यक है। ताकि एक सभ्य समाज की नींव रखी जा सके। आज के समय में मानव के जीवन में मूल्यों में निरन्तर गिरावट आ रही है। झूठ, धोखा, भ्रष्टाचार, बेईमानी, व्याभिचार जैसे दुर्गुणों का बोलबाला है जो मानवता को खतरे में डाल रहे है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य के भीतर के अंधकार को दूर करना होगा। उसे जागरूक बनाना होगा। यह जागरूकता उसे तन, मन और अध्यात्मिक रूप से समृद्ध बनाएगी। जीवन के मूल्यों की शिक्षा समाज को नये रूप में गढने का प्रमुख माध्यम है। यह समाज के नवयुवको को एक नयी दिशा प्रदान करेगी। जीवन मूल्यों की शिक्षा का प्रारम्भ बाल्यकाल से ही करना होगा, छात्रों को अच्छी शिक्षा हेतु प्रशिक्षित किया जा सकता है। परन्तु नैतिक मूल्यों एवं आदर्शो में नही।

मूल्य परक शिक्षा के उद्देश्य –

यूनेस्को UNESCO '1980' ने शिक्षा में मूल्यों के संवर्द्धन हेतु निम्न उद्देश्य निर्धारित किये हैं –

1. छात्रों में सहभागिता पूर्ण नागरिकता एवं अच्छे आदर्शो का विकास करना।
2. परस्पर प्रेम, भाईचारा, सम्मान की भावना का विकास करना एवं मूल अधिकारों का हनन न करने की शिक्षा प्रदान करना।
3. देश के प्रति निष्ठा, एकता एवं अखण्डता की भावना का विकास करना।
4. जीवन जीने के जनतांत्रिक विचारों को अपनाना।
5. विभिन्न धर्मो के प्रति सहिष्णुता, सहनशीलता एवं सम्मान की भावना विकसित करना।
6. वसुधैव कुटुम्बकम की भावना का विकास करना।
7. बच्चों, छात्रों को इस योग्य बनाना कि वो उच्च नैतिक आदर्शो के आधार पर अपने जीवन के निर्णय ले सके।
8. छात्रों में आध्यात्मिकता का विकास करना जिससे वो ब्रहमाण्ड में चलने वाली गतिविधियों में कारक एवं कारण को समझ सके।

मूल्यपरक शिक्षा पर विभिन्न आयोगों द्वारा दिये गये सुझाव –

1. सार्जेन्ट रिपोर्ट (1944)– इसने छात्रों में आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा के विकास के महत्व को स्वीकार किया।

2. विश्वविद्यालय आयोग (1948–49)– इस आयोग ने छात्रों में धार्मिक शिक्षा के प्रसार पर बल दिया ताकि छात्र अनुशान, नैतिक शिक्षा एवं धार्मिक समभाव विचारों से विमुख ना हो।

3. श्री प्रकाश कमेटी (1959)– इस आयोग को छात्रों में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर बल देने हेतु नियुक्त किया गया और साथ ही इस बात पर बल दिया गया कि छात्रों में शिष्टाचार, सामाजिक कार्य एवं अपने देश के लिए प्रेम की भावना का विकास हो।

4. राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66)– आयोग ने यह पाया कि वर्तमान समाज की आवश्यकताओं को देखते हुए आधुनिक शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। आधुनिक शिक्षा के साथ–साथ

सामाजिक दायित्वों, नैतिकता एवं आध्यात्मिक मूल्यों को शिक्षा में समाहित करना अति आवश्यक है।

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)– राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पाठ्यक्रम को फिर से नियोजित करने की आवश्यकता है। पाठ्यक्रम में सामाजिक मूल्यों को आवश्यक रूप से शामिल किया जाए ताकि एक सभ्य एवं आदर्श समाज की स्थापना हो सके।

शिक्षा में मूल्यों का समावेश :

विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूप रेखा जिसका क्रियान्वयन राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा किया जाता है, ने भी विद्यालयी शिक्षा में मूल्यों की शिक्षा के समावेशन पर जोर दिया है। शिक्षा के प्रारम्भिक वर्ष बालक के जीवन में अति महत्वपूर्ण होते है। इस अवस्था पर बालक जो कुछ भी सीखता है वही उसके जीवन का आधार बनती है। किशोरावस्था व्यक्ति के जीवन का महत्वपूर्ण पड़ाव है। इस अवस्था पर जीवन एवं सामाजिक मूल्यों की शिक्षा अत्यधिक महत्व रखती है।

बालक का मस्तिष्क कोमल मिट्टी की भांति होता है, जिसे जैसे चाहे आकार में ढाला जा सकता है। यही उपयुक्त समय होता है। बच्चे के मस्तिष्क में मूल्यों के गहरे समावेशन का जो उसका उम्र भर सही मार्ग दर्शन करते है। हमारा जीवन ग्रहित मूल्यों पर आधारित होता है। हम अपने जीवन में वही करते हैं जो मूल्य एवं संस्कार हमें प्राप्त होते हैं वही हमारे जीवन का सिद्धान्त बन जाते है। विद्यालय का वातावरण क्रियाशील एवं सीखने वाला होना चाहिए क्योंकि वहां बालक अपने सम्पूर्ण दिन के महत्वपूर्ण 6–7 घंटे बिताता है। विद्यालय से ही बालक का सर्वांगीण विकास होता है। अतः विद्यालय का परिवेश ऐसा हो कि बालक को अच्छी शिक्षा के साथ साथ उच्च मूल्यों की प्राप्ति हो।

NCF 2023 में 3–8 वर्ष के छात्रों को सम्पूर्ण विकास पर जोर दिया गया है क्योंकि यह अवस्था मानसिक विकास के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। NCF 2023 का उद्देश्य ना केवल पाठ्यक्रम अपितु सम्पूर्ण अधिगम वातावरण को महत्वपूर्ण बनाना है।

वर्तमान समय में प्राथमिक स्तर से ही छात्रों में नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान की जा रही है ताकि छात्रों में अंहिसा, सत्यवादिता, द्वेषरहित व्यवहार, संतोष, बंधुत्व जैसे सामाजिक मूल्यों का विकास हो सके, इसके लिए पाठ्यक्रम में विभिन्न महान व्यक्तियों के चरित्र पाठों के माध्यम से पढाए जा रहे है। विद्यालय में पुस्तकालयों का निर्माण किया जा रहा है। जहां पर हितोपदेश, पंचतंत्र जैसी पुस्तकों का संकलन है जो कि बालकों को नैतिक शिक्षा प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त बालकों के तन और मन दोनों की वृद्धि हेतु स्काउट गाईड, योग, पी.टी., कविता पाठ, प्रार्थना के कार्यक्रम नियमित रूप से कराए जा रहे हैं और ये सभी पाठ्यक्रम में आवश्यक रूप से सम्मिलित भी किए गए हैं।

मूल्यों के विकास में योग का महत्व :

योग का शाब्दिक अर्थ है जोडना। योग, ध्यान केन्द्रित करने की एक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के तन, मन, भावना और ऊर्जा के स्तर पर काम करती है। योग के महत्व को अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किया जा चुका है। मन को एकाग्र, शांत करने में योग अति महत्वपूर्ण है। प्रसिद्ध योग गुरूओं जैसे योग आनंद जी, आचार्य श्री राम शर्मा, बाबा रामेदव ने ध्यान एवं योग को स्वस्थ जीवन का आधार कहा है योग के माध्यम से मनुष्य में विवेक उत्पन्न होता है। ध्यान, योग, प्रार्थना को सभी धर्मो में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

बालकों में चारित्रिक गुणों का विकास करने एवं स्वस्थ रहने हेतु विद्यालयों में योगाभ्यास कराए जाने चाहिए। समय–समय पर छात्र एवं शिक्षकों के योगाभ्यास हेतु सेमिनार एवं कार्यशाला आयोजित की जानी चाहिए।

मूल्यों के विकास में शिक्षकों की भूमिका :

प्रारम्भ से ही शिक्षक ने समाज के पथ प्रदर्शक के रूप में सम्मान पाया है। भारत में गुरू, शिक्षक को ईश्वर तुल्य बताया गया है। किसी राष्ट! का समाज कैसा है, ये इस बात पर निर्भर करता है कि वहाँ शिक्षा की व्यवस्था कैसी है। सरकार कितना भी अच्छा, समृद्ध पाठ्यक्रम तैयार कर ले परन्तु उसको फलीभूत करना केवल शिक्षक के ऊपर निर्भर होता है। शिक्षक को समाज में आदर्श रूप में देखा जाता है। एक शिक्षक में वो सभी चारित्रिक विशेषताएँ आवश्यक रूप से होनी चाहिए जिनका अनुसरण करके बालक के चरित्र का भी विकास हो। एक शिक्षक जैसा चाहे अपने छात्रों को बना सकता है। शिक्षक से उच्च आदर्शो की अपेक्षा की जाती है। प्रेम, दया, सहनशीलता उसके स्वाभाविक गुण हैं। एक शिक्षक का कर्तव्य है कि वह पाठ्यक्रम के साथ–साथ बच्चों में उच्च मूल्यों का भी विकास करे, शिक्षक बच्चों के लिए रोल मॉडल होते है। शिक्षक जैसा करते हैं, बच्चे उसका अनुकरण करते हैं। बच्चे अपने माता–पिता की बातों से असहमत हो सकते हैं, परन्तु अपने शिक्षक से नही। इसलिए शिक्षक का अपने छात्रों की आदतों, व्यवहारों, जीवन मूल्य, कौशलों और इन सबसे अधिक चरित्र एवं व्यक्तित्व के निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षक एवं कक्षाकक्ष के महत्व को देखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा आयोग '1964–66' ने सटीक रूप से स्पष्ट किया है कि भारत के भविष्य का निर्माण कक्षा कक्ष में होता है।

मूल्यों के विकास में परिवार का महत्व :

परिवार समाज की लघुत्तम इकाई है। परिवार से समाज, समाज से राष्ट! का निर्माण होता है। परिवार ही बालक की प्रथम पाठशाला है। विद्यालय से पूर्व बालक परिवार में रहकर ही सीखता है। परिवार से ही सभ्यता, संस्कृति, पारिवारिक मूल्यों का हस्तान्तरण बालक में होता है, बालक परिवार में सर्वाधिक अनुकरण अपने माता पिता का करता है। इसमें भी बालक में मूल्यों का प्रवाह माता की ओर से अधिक होता है। इसलिए मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने में माता की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। प्राचीन काल से ही माता को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है, उसके बाद पिता को बालक का अधिकांश समय अपनी माता के ईद गिर्द ही व्यतीत होता है। उच्च आदर्शो वाली माता अपने बच्चों में उच्च आदर्शो का संचार करती है। माता–पिता से बच्चा प्रेम, करूणा, सहनशीलता, सदाचार, बडो का सम्मान करना आदि गुण स्वाभाविक रूप से सीखता है। बच्चे को उच्च आदर्श

एवं संस्कार प्रथमतः अपने परिवार से ही प्राप्त होते है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त चर्चा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मनुष्य को एक अच्छा नागरिक होने के लिए उसके भीतर उच्च आदर्शो एवं मूल्यों का होना अति आवश्यक है। ताकि वह सही और गलत में अन्तर कर सके। मूल्यों की शिक्षा व्यक्ति को दूसरों के प्रति उत्तरदयित्व की भावना सिखाती है। समाज की संस्कृति, सभ्यता, मूल्यों को सहेजना एवं अगली पीढी को हस्तान्तरित करने हेतु नागरिकों का उच्च आदर्शो को अपनाना अति आवश्यक है। इसका प्रारम्भ मनुष्य में प्रारम्भ से प्राथमिक स्तर से ही हो जाना चाहिए।

हमारी प्राथमिकता ऐसे छात्रों को तैयार करना है जो खुले विचारों वाले हो परन्तु असभ्य ना हो। स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति की आड़ में वो अपने परिवार, समाज के उच्च आदर्शो, सभ्यता एवं संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास ना करे, इसके लिए आवश्यक है कि प्रारम्भ से ही उनके भीतर सभ्यता, संस्कृति एवं मूल्यों के ऐसे बीज बोये जाए कि उनसे एक ऐसा वट वृक्ष तैयार हो जिसकी जडे इतनी गहरी हो कि समय की आँधी में भी वह अटल, अजर, अमर रहे।

संदर्भ सूची :

1. अग्रवाल जे.सी., एजूकेशन फॉर वैल्यूज, एन्वायरमेंट एंड हयूमन राइट्स, शिप्रा पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
2. ए स्टडी ऑफ मोरल जजमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट्स, शोध गंगा।
3. शर्मा चेतना '2015'–शोध गंगा–shodhganga.inf Libnet.ac.in : ए. स्टडी ऑन एटीटयूड ऑफ सेकण्डरी स्कूल स्टूडेन्टस टूवारडस मोरल वैल्यूज ।
4. मौहम्मद चौधरी – एम्फेसाइजिंग मोरलस, वैल्यूज, एथिक्स, कैरेक्टर एजूकेशन इन सांइस एजूकेशन एंड सांइस टीचींग : मलेशियन ऑन लाईन जनरल ऑफ एजकेशनल सांइस 2016 'Volume-4-issue-2'
5. NCERT, 2006, जनरल ऑफ इंडिया एजूकेशन
6. NCERT, 2004, जनरल ऑफ वैल्यू एजूकेशन
7. अन्वेषिका, इंडियन जनरल ऑफ टीचर एजूकेशन
8. डॉ. उपाध्याय शोभा–मूल्य आधारित शिक्षा का वर्तमान परिवेश में महत्व।